एफ एन टी ओ के मनगढ़न्त झूठे आरोपों पर
बी एस एन एल ई यू का जवाब.

---------x---------

जैसा कि आप जानते हैं कि, एन.एफ.टी.ई. ओ यूनाइटेड़ फोरम से हट गया है। ऐसा करने के लिए एफ एन टी ओ के नेता श्री वल्लीनायगम को कुछ न कुछ कारण तो बताना ही है। ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि एन.एफ.टी.ई. ओ के अधिकतर परिमण्ड़ल एवम् जिला स्तरीय नेताओं को वल्लीनायगम जी का यह निर्णय रास नहीं आ रहा है। इसके साथ ही, बी एस एन एल ई यू के नेतृत्व वाले मोर्चे से हटकर एन एफ टी ई की झोली में जाने वाली बात तो एफ एन टी ओ के नीचे के स्तर के नेताओं के गले में बिलकुल ही नहीं उतर रही है। यही कारण है कि , बी एस एन एल ई यू की कलकत्ता कार्य समिति के खुले सत्र में 03.11.2008 को एफ एन टी ओं के पश्चिम बंगाल के परिमण्ड़ल सचिव श्री आलोक नंदी ने घोषणा कर दी कि, वे एफ एन टी ई के साथ नहीं जाएंगें और आगामी 21 जनवरी 2009 को होने वाले चुनाव में अपने सभी समर्थकों के साथ बी एस एन एल ई यू के पक्ष में ही मतदान करेंगें। उन्होनें कहा कि, पूरे देश में एफ एन टी ओ की अनेक इकाइयां भी ऐसा ही करने वाली हैं।

हालांकि यह बात स्पष्ट है कि, बी एस एन एल के निजीकरण का समर्थन करने के लिए ही एफ एन टी ओ ने एन एफ टी ई से फिर हाथ मिलाया है किन्तु वे यह सच्चाई अपने समर्थकों को बता तो नहीं सकते क्योंकि आज कोई भी कर्मचारी, चाहे वह किसी भी यूनियन का सदस्य हो, बी एस एन एल का निजीकरण नहीं चाहता। सिर्फ इतना ही नहीं, बी एस एन एल का प्रत्येक कर्मचारी निजीकरण के विरोध में ईंट से ईंट बजा देने तक के लिए तैयार है।
आइये देखें कि एफ एन टी ओ ने बी एस एन एल ई यू के नेतृत्व वाले मोर्चें से हटकर एन एफ टी ई के साथ जाने के लिए क्या कारण बताएं हैं और बी एस एन एल ई यू ने उनका क्या जवाब दिया है।

<u>01. मनगढ़न्त झूठा आरोप नं. 01ः–</u>बी एस एन एल ई यू ने पांच प्रमोशन की मांग हासिल करने के लिए गंभीर प्रयास नहीं किए।

उत्तरः–यह आरोप पूरी तरह मनगढ़न्त है। हमारे गंभीर प्रयासों के बाद भी पांच प्रमोशन की मांग हमारे प्रयासों के अनुरूप सेटिल नहीं हो पायी है। किन्तु अब सभी देख रहें हैं कि एफ एन टी ओ अपने समर्थकों से देश भर में कह रहा है कि पांच प्रमोशन की मांग सेटिल न करने के लिए दिल्ली टेलीग्राम भेजो।

<u>02. मनगढ़न्त झूठा आरोप नं. 02ः–</u> बी एस एन एल ने एफ एन टी ओ को काउन्सिल आदि में समझौता के अनुसार सीटें नहीं दी।

उत्तरः—यह आरोप भी पूरी तरह मनगढ़न्त है। हमने आगे बढ़कर एफ एन टी ओ को सीटें दी थी, बल्कि सच्चाई यह है कि सीटों के विषय में एफ एन टी ओ ने ही गैर वाजिब क्लेम जताता रहा है। उदाहरण के लिए हम बताना चाहते हैं कि तीसरे चुनाव की पूर्व संध्या पर एफ एन टी ओ की भरूच इकाई (गुजरात) के सभी सदस्यों ने बी एम एस में जाकर चुनाव लड़ा और एफ एन टी ओ का जिला सचिव ही बी एम एस का जिला सचिव भी बना। किन्तु बी एस एन एल ई यू को मान्यता मिलने के बाद वे फिर एफ एन टी ओ में आ गए और बी एम एस का जिला सचिव फिर एफ एन टी ओ का जिला सचिव बन गया और काउन्सिल में 7 सीटों की मांग पेश कर दी।

स्वाभाविक रूप से बी एस एन एल ई यू की भरूच जिला इकाई ने इन लोगों को सीटें देने से इंकार कर दिया था तो इसमें क्या गलत था?

03. मनगढ़न्त झूठा आरोप नं. 03ः— बी एस एन एल ई यू ने दुर्भावना वश एफ एन टी ओ के सदस्यों के स्थानान्तरण करवाए।

उत्तरः— यह भी एक दम झूठा आरोप है। बल्कि सच्चाई यह है कि एफ एन टी ओ के नेता ही स्पष्ट नीतिगत स्थानान्तरणों पर हाय तौबा मचाने लगते थे। उदाहरण के लिए एफ एन टी ओ ने कहा है कि बरेली (उत्तर प्रदेश) में उनके एक सक्रिय सदस्य का स्थानान्तरण करवाया गया। क्या बात है? सच्चाई यह है कि कुल 71 कर्मचारियों के रोटेशनल स्थानान्तरण हुए थे जिनमें से एफ एन टी ओ का सम्बन्धित कर्मचारी जो विगत 7 सालों से वेतन अनुभाग में पदस्थ था, बरेली में ही दूसरे अनुभाग में स्थानांतरित किया गया था। फिर भी एफ एन टी ओ की मांग पर देश में जहां कहीं भी ऐसे स्थानान्तरण हुए थे जिन्हें एफ एन टी ओ का केन्द्रीय नेतृत्व नहीं चाहता था, बी एस एन एल ई यू के मुख्यालय ने जरूर हस्तक्षेप किया था।

नोट— नीतिगत सामान्य प्रकृयाः—

एफ एन टी ओ विगत चार सालों से बी एस एन एल ई यू के नेतृत्व वाले ''यूनाइटेड़ फोरम'' रूपी खूबसूरत वृक्ष का एक हरा भरा पत्ता था। और अब स्वाभाविक कारणों से सूखकर एन एफ टी ई नामक बंजर जमीन पर जा गिरा है। ऐसी स्थिति में, सूखा पत्ता, झाड़ से गिरकर बंजर जमीन पर गिर जाने के लाख कारण तलाश ले, किन्तु इसके सिवाय वह दूसरा कोई कारण नहीं बता पाएगा कि, वह सामान्य प्रकृया के कारण ही सूख गया था तथा सामान्य प्रकृया के कारण ही उसे टूटकर बंजर जमीन पर गिरना ही था। यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें न तो यह उस वृक्ष के बस में रहता है कि, वह सूखे पत्ते को गिरने से बचा सके और न ही यह उस पत्ते के वस में रह जाता है कि, वह खूबसूरत वृक्ष से न गिरे।

(एस.आर.नायक)

परिमण्ड़ल सचिव

बी एस एन एल ई यू म. प्र. परिमण्ड़ल